AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

हजारीबाग जिला के शैक्षणिक विकास में डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन का योगदान

ORIGINAL ARTICLE

Author
सुनील कुमार वर्मा
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग
माँ विन्ध्यवासिनी कॉलेज ऑफ एजुकेशन
पदमा, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

शोध सार

ईसाई धर्मप्रचारकों ने निष्ठा पूर्वक भारत के प्रायः समस्त भू–भागों में धर्मप्रचार का कार्य किया। छोटा नागपुर जैसे अविकसित और उपेक्षित क्षेत्र के अंतर्गत यह व्यवस्थित जनजातियों को भी उन्होंने अंधकार के गर्त से उभारने के लिए नई दिशा और दृष्टि प्रदान की। ईसाई मिशनरियों के अथक प्रयासों के कारण ही इनका जीवन अन्य विकसित और समुन्नत जातियों के समकक्ष आने में समर्थ हो सका। ईसाई मिशनरियों के छोटा नागपुर आगमन का मुख्य उद्देश्य धर्म प्रचार ही था, फिर भी इनके प्रयत्न से हमारा अत्यधिक कल्याण हुआ। आयरलैंड से छोटा नागपुर के लिए डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन 8 मार्च 1892 ई० को सोसायटी फॉर द प्रोपगेशन ऑफ द गोस्पेल के सहयोग से हजारीबाग में शुरू हुआ। छोटा नागपुर के तत्कालीन विशप जे०सी० व्हिटली ने मिशन कार्य में सहयोग किया। डबलिन मिशन के सभी सदस्य स्नातक थे। उन्होंने हजारीबाग शहर के शिक्षित सज्जनों को सार्वजनिक व्याख्यान दिये, लेकिन उनसे सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं मिली। डबलिन यूनिवर्सिसिटी मिशन चिकित्सा एवं शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय रूप से सफल रहा। मिशन के पास शुरू से ही एक मजबूत चिकित्सा कर्मचारी था। हजारीबाग एवं अन्य मिशन केन्द्रों पर औषधालय और अस्पताल का निर्माण सेंट कोलंबा के जनाना मिशन अस्पताल ने अपने दक्षता के लिए महान नाम हासिल किया। इसने एक नर्सिंग स्कूल चलाया। मिशनरी के सभी सदस्य शिक्षित होने के कारण हजारीबाग में शिक्षा प्राप्त करने पर बहुत ध्यान दिया। कई प्राथमिक, मध्य एवं उच्च विद्यालय की स्थापना की गई। मिशन ने शिक्षा का प्रचार हजारीबाग, सीतागढ़, डूमर, गिरिडीह, कोडरमा, बगोदर, मांडु, रामगढ़, गोला, चतरा और इचाक क्षेत्रों में किया। मिशन ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में 1899 ई० में अविभाजित बिहार में पहला ईसाई कॉलेज संत कोलंबा कॉलेज हजारीबाग में शुरू किया गया। संत कोलंबा कॉलेज में उत्तर–बिहार, बंगाल और उड़ीसा के छात्र पढ़ने आते थे। इस प्रकार डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन ने उच्च शिक्षा के में काफी योगदान दिया।

मुख्य शब्द

डबलिन मिशन, धर्मप्रचारक, सोसायटी, प्रोपगेशन, औषधालय.

प्रस्तावना

डबलिन युनिवर्सिटी मिशन की स्थापना आयरलैण्ड डबलिन में 1890 ई० में हुई थी। डबलिन के ट्रिनिटी कॉलेज के उत्साही विद्यार्थियों के समूह द्वारा इस मिशन की स्थापना की गई थी और इस मिशन के सदस्य इंग्लैण्ड के एस.पी.जी. मिशन के सचिव रेव. आर.डी.ओ. मर्टिन से संपर्क किया। डबलिन मिशन के सदस्य एस.पी.जी. मिशन

के अंतर्गत कार्य करने लगे। 10 नवम्बर, 1891 ई. में इस मिशन के कुछ सदस्यगण रेभ. अय्यर चैटरटन, सी. डब्लू. डॉर्लिंग, जे. ए. मुर्रे, जी. एफ. हेमिल्टन, के. डब्लु. एस. केनेडी एवं फ्रांसीस हसार्ड छोटा नागपुर के लिए प्रस्थान किए। वे सभी धर्म प्रचारक मार्च, 1892 ई० में छोटा नागपुर के हजारीबाग पहुँचे। छोटा नागपुर के तत्कालीन विशप जे. सी. व्हिटली ने भारत सरकार से अनुमति प्राप्त कर हजारीबाग में इन मिशनरियों के कार्य करने का निर्णय लिया। विशप जे. सी. व्हिटली के निवेदन से भारत सरकार ने इस धर्म प्रचारकों को हजारीबाग के खंडरनुमा सैनिक छावनी में रहने की अनुमति दिया। सन् 1899 ई० में भारतीय ईसाई धर्म प्रचारकों (उपदेशकों) को तैयार करने के लिए एक प्रशिक्षण केन्द्र खोला गया। 1901 ई० में रेव. हैमिल्टन एवं रेव. सी. एफ. व्हाइट को चितरपुर शाखा स्टेशन में नियुक्त किया गया। चार नई मिशन मंडलियों की स्थापना चितरपुर, पीटरवार, तुरूकडीह एवं पोटमो में की गई थी। अब मिशन को भारतीय पादरी की आवश्यकता महसूस होने लगी। सन् 1905 ई. में प्रभु दास रेवेन एवं विलियम तिर्की को डींकन बनाया गया। उन्हें 1908 ई. में पुजारी (पादरी) घोषित किया गया। श्री पी. एल. सिंह को 1910 ई. में पुजारी के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। सन् 1915 ई. में प्रथम विश्वयुद्ध के कारण छोटा नागपुर में गोस्सनर मिशन को नजरबंद कर दिया गया था। इसी दौरान विशप फाँस वेस्टकॉट ने डबलिन मिशन को गोस्सनर मिशन के कार्य की देख–रेख करने को कहा था। 1923 ई. में हजारीबाग क्षेत्र के ग्रेब्रियल हेम्ब्रोम, जिन्हें विशप कॉलेज कलकत्ता से प्रशिक्षित किया गया था पुजारी के रूप में उन्हें नियुक्ति मिली।

सन् 1924 ई. में भारतीय मंडली हजारीबाग, सीतागढ़, डुमर, तुरूकडीह, चितरपुर, पीटरवार, रामगढ़, ईचाक, कोडरमा, सिरका, पोटमदाग, पोटमा, गोमिया, बेरमो, भुरकुण्डा, गिरिडीह एवं बोकारो में कार्यरत थी। यूरोपीय मंडलियाँ हजारीबाग, गिरिडीह, कोडरमा एवं बोकारो में कार्यरत थी।

इमैनुएल सोय जो विशप कॉलेज कलकत्ता से प्रशिक्षित थे उन्हें 1925 ई. में कलकत्ता में ही पुजारी के पद पर नियुक्त किया गया। सन् 1947 ई० तक जोबला, कुंद्रा, कोठी एवं चतरा में नई भारतीय मंडलियों का आयोजन किया गया।

शोध उद्देश्य

डबलिन युनिवर्सिटी मिशन के शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में योगदान को उजागर करना तथा विभिन्न स्रोतों के आधार पर हजारीबाग के शिक्षा और संस्कृति के विकास में डबलिन मिशन द्वारा किये गये सामाजिक–सांस्कृतिक एवं मानवीय सेवा को उजागर करना।

शोध विधि

शोधार्थी इस शोध विधि में विश्लेषणात्मक व्याख्या की है, इसके लिए द्वितीयक स्रोतों का सहारा गया है, साथ प्रकाशित ग्रंथ, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में छपे लेख, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध–कार्य एवं इंटरनेट का सहारा लिया गया है।

शोध विश्लेषण

हजारीबाग विभिन्न मिशनों का कार्य क्षेत्र रहा है। शैक्षिक दृष्टि से तीन मिशनों का कार्य प्रमुख रहा है। शैक्षिक संस्थानों की परिगणना की जाए तो सर्वाधिक विद्यालयों की स्थापना रोमन कैथोलिक मिशन, डबलिन मिशन एवं एस. पी. जी. मिशन द्वारा किया गया है। हजारीबाग में शिक्षा के विकास का श्रेय ईसाई मिशनरियों के अथक परिश्रम एवं अटूट धैर्य को जाता है। ईसाई धर्मप्रचारकों ने प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक विद्यालय, उच्च विद्यालय एवं महाविद्यालयों की स्थापना और संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

शैक्षणिक सेवा

डबलिन मिशन ने शिक्षा का प्रचार–प्रसार का कार्य आरंभ से ही किया। इस मिशन के सभी पुरूष मिशनरी स्नातक थे। डबलिन मिशन के हजारीबाग आगमन के पश्चात् एक ईसाई बोर्डिंग स्कूल की स्थापना की योजना बनाई गई। बोर्डिंग स्कूल की स्थापना के लिए आयरलैंड से सहायता मांगी गई थी जो सफल रहा। हजारीबाग में रोमन

कैथोलिक मिशन की लोरेटो सिस्टर्स ने शिक्षा की ओर अपना कदम बढ़ाया था। लॉरेटो बहनों द्वारा हजारीबाग में स्कूल संचालित की गई थी परंतु डबलिन मिशन के आगमन के लगभग छहः महीने बाद लॉरेटो बहनों ने शिक्षिकाओं की अनुपलब्धता के कारण बंद कर दिया। एक ग्रामीण परिक्षेत्र सीतागढ़ में एक स्कूल पूर्व से ही संचालित था। अतः इस स्कूल में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए मिशनरियों ने अपना योगदान दिया। जर्मन मिशनरी द्वारा स्थापित स्कूल जो किसी कारणवश बंद कर दिया गया था उसे जर्मन मिशन स्कूल के स्थान पर रेव. (डॉ.) केनेडी ने इसकी देखरेख की जिम्मेदारी ली। उन्होंने डुमर क्षेत्र में लड़कों के लिए एक विद्यालय स्थापित किया। शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षण कक्षा प्रारंभ किया जिससे वे प्रशिक्षित होकर बेहतर तरीके से बच्चों को शिक्षा दे सकेंगे। 1895 ई. में मिस बीले द्वारा हजारीबाग में बंगाली छात्राओं के लिए एक स्कूल की नींव रखी गई। 15 अप्रैल, 1895 ई. में बालकों के लिए एवं उच्चतर शिक्षा के लिए एक हाई स्कूल की स्थापना की गई जिसे डबलिन युनिवर्सिटी मिशन स्कूल के नाम से जाना जाता है। कई बाधाओं के पश्चात् हजारीबाग में इस स्कूल की नींव रखी गई थी जिसके प्रधानाचार्य रेव. सी. डब्लू. डार्लिंग थे। इस विद्यालय में सात छात्र एवं सात शिक्षक थे, परंतु 6 महीने में बढ़कर विद्यार्थियों की संख्या 65 हो गई। रेव. हैमिल्टन ने 1897 ई. में हजारीबाग शहर के हिन्दू–मुस्लिम लड़कों के लिए एक स्कूल की स्थापना की जो काफी लोकप्रिय हो गया था, बाद में इस स्कूल को हेमिल्टन फ्री स्कूल के नाम से जाना जाने लगा।

डबलिन युनिवर्सिटी मिशन पहला ईसाई मिशन था जिसने छोटा नागपुर में पहला महाविद्यालय की स्थापना की। हजारीबाग जैसे स्थान पर ऐसे कॉलेजों की स्थापना करना, उन दिनों ऐसे कॉलेजों की कल्पना करना काफी दुरूह था। मिशन के अथक प्रयास से कॉलेज की स्थापना की गई। इस मिशन द्वारा जुलाई, 1899 ई. में एक कॉलेज की स्थापना की गई, जिसे डबलिन युनिवर्सिटी मिशन कॉलेज के नाम से जाना जाता था जो छोटा नागपुर का प्रथम डिग्री कॉलेज था इसके प्रथम प्रिंसिपल रेभ० जे० ए० मुर्रे थे। इस महाविद्यालय की शुरूआत 13 विद्यार्थियों से किया गया था। यह एकमात्र मिशनरी कॉलेज गैर–क्रिश्चियनों के लिए था जो कलकत्ता विश्वविद्यालय से संबद्ध था। जिसमें कला संकाय की पढ़ाई होती थी। इस महाविद्यालय में अय्यर चैटरटन के मतानुसार प्रथम वर्ष में 12 विद्यार्थी एवं द्वितीय वर्ष में 13 विद्यार्थी अध्ययनरत थे।

इस कॉलेज की कक्षाएँ डाकघर के बंग्ले में आयोजित की जाती थी। सन् 1900 ई. में रामगढ़ के राजा राम नारायण सिंह ने इस कॉलेज के लिए 3000/– रूपये दान दिये थे। इस कॉलेज की पढ़ाई उत्तम कोटि की थी। इसका प्रमाण प्रथम बैच के कला के परीक्षा के परिणाम से चलता है जिसमें 14 छात्रों में से 8 छात्र उत्तीर्ण हुए थे। 1900 ई. की पहली परीक्षा में अन्य भारतीय कॉलेजों की अपेक्षा इसमें 25 प्रतिशत से अधिक छात्र उत्तीर्ण हुए थे।

सन् 1904 ई. इस कॉलेज को कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. ए. तक की मान्यता मिल गई। इस समय 1904 ई. में इस कॉलेज के प्राचार्य रेव. एस. एल. थॉमसन नियुक्त हुए थे लेकिन इसी समय कॉलेज को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। ऐसे समय में बंगाल के उपगवर्नन सन एण्ड्रु फ्रेजर ने हजारीबाग का दौरा किया। मिशन द्वारा स्थापित चिकित्सा एवं शैक्षणिक संस्थानों का गहनतापूर्वक निरीक्षण किया। वे मिशन की कार्यशैली से काफी प्रभावित हुए। अपनी उदारता का परिचय देते हुए उन्होंने 15000/–रूपये कॉलेज को दान किये साथ ही आम जनता से उन्होंने अपील किया कि अगर आम जनता 15000/– रू. की धनराशि कॉलेज के लिए दे पाए, तो कॉलेज का विकास बड़ी तीव्र गति से होगा। सरकार ने प्रतिमाह 250/–रू. का अनुदान कॉलेज को देने का वादा इस शर्त पर किया कि कॉलेज आवासीय होगा। कॉलेज में अब कई परिवर्तन करने पड़े, क्योंकि बंगाल क्षेत्र के कई हिस्सों से छात्र अध्ययन के लिए आने लगे थे। कॉलेज में छात्रों की संख्या 86 हो गई थी। मिशन के आवासीय छात्रावास में 44 छात्र रहते थे। सन् 1906 ई. में इस कॉलेज का नाम बदलकर संत कोलम्बा कॉलेज कर दिया गया। 1907 ई० में सर एंड्रयू फ्रेजर ने नए भवन की नींव रखी। 1912 ई० में 39000/– के सरकारी अनुदान से कॉलेज के 'किंग एम्परर ब्लाक्स' का नींव रखा गया। सन् 1915 ई. में रेव. एस. एल. थॉमसन के स्थान पर रेव. एफ. एच. डब्ल्यू केर को संत कोलंबा कॉलेज का प्राचार्य नियुक्त किया गया। 1916 ई. में कॉलेज में कुल 204 छात्र थे। इसमें से एक छात्र बेनी सिमलाई जिसने 1915 ई० में स्नातक की डिग्री प्राप्त किया था उसने बपतिस्मा ग्रहण कर लिया। सन् 1917 ई. में पटना विश्वविद्यालय स्थापित हुआ। कोलंबस कॉलेज 1917 ई. में पटना विश्वविद्यालय से संबंद्ध हो गया।

1917 ई. में सरकारी अनुदान से 50,000/—रू. से विज्ञान प्रयोगशाला का निर्माण किया गया जिसका उद्घाटन 3 नवम्बर, 1917 ई. को बिहार एवं उड़ीसा के उप—राज्यपाल सन एडवर्ड गेट द्वारा किया गया।

1921 ई. में इस कॉलेज के प्राचार्य रेव. ओ. ए. हार्डी नियुक्त हुए। सन् 1923 ई. में इस कॉलेज में 175 विद्यार्थी अध्ययनरत थे। भारत की स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान महात्मा गाँधी सन् 1925 ई. में संत कोलंबा कॉलेज के व्हिटली हॉल में ऐतिहासिक भाषण दिया। जनवरी, 1930 ई० में रेव. ए. एफ. मार्खम प्राचार्य नियुक्त हुए। वे प्राचार्य के पद पर 1965 ई. तक सुशोभित रहे। डॉ. ए. एफ. मार्खम राँची विश्वविद्यालय के उपकुलपति एवं कुलपति बने। सन् 1945 ई. में इस कॉलेज में 335 छात्र अध्ययरत थे। सन् 1945 ई. में बी. एससी. की कक्षाएँ प्रारंभ की गई। स्वतंत्रता के पश्चात् सन् 1952 ई. में बिहार विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद संत कोलम्बा कॉलेज इसका अंग बन गया। सन् 1962 ई. में राँची विश्वविद्यालय की स्थापना के बाद यह कॉलेज राँची विश्वविद्यालय से संबंद्ध हो गया।

सन् 1901 ई. में हजारीबाग के ग्रामीण परिक्षेत्र चितरपुर में एक गर्ल्स स्कूल की शुरूआत की गई। इसके पश्चात् 1902 ई. में मिस व्हाइट ने लड़कियों के लिए तीन मिशन स्कूल की शुरूआत की जिसमें से एक मेहतर टोली में, दुसरा चमार टोली में एवं तीसरा हजारीबाग के मटवारी में। हेमिल्टन की स्कूल को उच्चतर कक्षा तक विस्तारित किया गया। सन् 1903 ई. में दो रात्रि विद्यालय पड़ोसी गाँवों में आरंभ किया गया। मिशन द्वारा संचालित विद्यालयों में सरकार से छोटा मासिक अनुदान मिलता था। 6 जनवरी, 1920 ई. को हजारीबाग के ईसाई लड़कियों के लिए एक स्कूल स्थापित किया गया जिसे संत किरण बालिका विद्यालय के नाम से जाना जाता था। अगले वर्ष में उच्च प्राथमिक स्तर तक और 1 जनवरी, 1929 ई० से मिडिल स्कूल तक की मान्यता मिल गई। सन् 1924 ई. तक मिशन द्वारा बालकों के लिए 9 स्कूल, 4 रात्रि विद्यालय एवं 10 बालिका स्कूल संचालित किए जा रहे थे। हजारीबाग जिला बोर्ड द्वारा मिशन स्कूलों को 5000/— रू. प्रति वर्ष अनुदान दिया जाता था। बंगाली बालिका विद्यालय सेंट ब्रिगेड स्कूल को नए भवनों में स्थान्तरित किया गया जिसे 1934 ई. में मिडिल स्कूल तक की मान्यता मिलन गई। हिन्दी बालिका विद्यालय हजारीबाग का नाम परिवर्तित कर संत एलिजाबेथ विद्यालय किया गया। सन् 1937 ई. तक मिशन द्वारा संचालित स्कूलों में 16 बालक विद्यालय, 2 रात्रि विद्यालय एवं 7 बालिका विद्यालय थे। सन् 1947 ई. तक हजारीबाग के ईचाक और संत ब्रिगेड स्कूल हजारीबारग बंद कर दिए गए थे। उस समय तक बालकों के लिए 12 स्कूल, बालिकाओं के लिए 9 विद्यालय, रात्रि पाठशाला 5 संचालित हो रहे थे।

लिस्टर के मतानुसार मिशन द्वारा सन् 1916 ई. तक 11 बालक विद्यालय, 12 बालिका विद्यालय एवं 7 रात्रि विद्यालय संचालित हो रहे थे। सन् 1918 ई. तक मिशन द्वारा कुल 44 विद्यालय संचालित किए जा रहे थे जिसके कुल 71 शिक्षक थे एवं 1403 छात्र अध्ययनरत थे। 1947 ई. तक डबलिन मिशन के संत कोलम्बा कॉलेज में 335 विद्यार्थी, मिशन हाई स्कूल में 300 विद्यार्थी एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय में 145 विद्यार्थी अध्ययनरत थे। मिशन द्वारा 01 कॉलेज, 01 उच्च प्राथमिक विद्यालय, 11 बालक विद्यालय, 01 मिडिल बालिका विद्यालय, 06 बालिका विद्यालय एवं 05 बालक रात्रि पाठशाला संचालित किए जा रहे थे।

चिकित्सा सेवा

प्रारंभ से ही डबलिन युनिवर्सिटी मिशन का मुख्य उद्देश्य चिकित्सा सेवा को मजबूत करना था। डबलिन मिशन हजारीबाग पहुँचने के तुरंत बाद रेव. (डॉ.) के. डब्लू. एस. केनेडी एवं मिस हैसार्ड ने द्विभाषियों की सहायता से चिकित्सा कार्य आरंभ किया। प्रारंभ में अस्पताल सैनिक छावनी में प्रारंभ किया गया जहाँ मिशन के सदस्य रूके थे। यह स्थान मिशन के कई उद्देश्यों को पूरा करता था। शुरूआत के दो महिने तक इन्होंने बंग्ले के आसपास के बाजारों एवं ग्रामीण परिक्षेत्र में ईलाज का कार्य आरंभ किया। 6 मई 1892 ई. को हजारीबाग में एक औषधालय एवं पुरूषों के लिए एक अस्पताल का निर्माण किया गया। यह अस्पताल अपने कार्यक्षेत्र में विशेष योगदान देने के लिए बड़ी लगन से कार्य किया। इस अस्पताल का पहला रोगी बिकना था जो एक कुली था। वह मिशन अस्पताल में भवनों की मरम्मत करता था। नवम्बर, 1892 ई. में महिला औषधालय एवं महिलाओं के लिए एक अस्पताल का निर्माण किया गया जिसकी देखरेख मिस हैसार्ड के द्वारा की जाती थी। नवम्बर, 1892 ई. में मिस हैसार्ड की सहायता के

लिए मिस रिचर्डसन शामिल हो गईं। अप्रैल, 1893 ई. में रेव. (डॉ.) जे. जी. एफ. हॉर्न यहाँ पधारे। यहाँ आते ही अस्पताल का दौरा किया एवं अस्पताल की कमियों को इंगित कर उसे सुधारने का पूर्णतः प्रयास किया। 1893 ई. में मिशन अस्पताल में 150 से अधिक रोगियों का ईलाज किया गया था। रामगढ़ के राजा द्वारा दान दी गई इमारत में सन् 1897 ई. में ईचाक क्षेत्र एवं पीटरवार में औषधालय स्थापित किया गया। डॉ. आरित कच्छप सप्ताह में दो बार ईचाक बाजार के अस्पताल एवं औषधालय में कार्य करते थे। डॉ. कोमल तिर्की ने पेटरवार औषधालय का कार्यभार संभाला था। 1897 ई. के समयांतराल में 323 रोगियों का ईलाज अस्पताल में एवं 15536 बाह्य रोगियों का ईलाज हजारीबाग, पेटरवार एवं ईचाक के अस्पताल एवं औषधालयों में किया गया। 1899 ई. में चितरपुर को एक शाखा स्टेशन अस्पताल एवं औषधालय के लिए चुना गया था। डॉ. कोमल तिर्की को पेटरवार से चितरपुर स्थांतरित किया गया। सन् 1904 ई० में डॉ. केनेडी द्वारा चितरपुर में एक अस्पताल का निर्माण किया गया एवं 1915 ई. एक शाखा औषधालय रामगढ़ में भी बनाई गई।

सन् 1906 ई. में मिशन की पहली लेडी डॉक्टर मिस ईवा जे. जेलेट का हजारीबाग में आगमन हुआ। संत कोलबा जेनान अस्पताल के नाम से एक महिला अस्पताल निर्माण का प्रयास किया गया। 7 नवम्बर, 1907 ई. को बंगाल के उपराज्यपाल सर एण्ड्रयू फ्रेजर की पत्नि लेडी फ्रेजर द्वारा अस्पताल की आधारशिला रखी गई। 1909 ई. में एक अन्य महिला चिकित्सक मिस सी. ई. ओ. मीरा हजारीबाग आई। सन् 1910 ई. में मिशन के अस्पतालों और औषधालयों में 722 अन्तः रोगियों एवं 22676 बाह्य रोगियों का ईलाज किया गया। डॉ. हर्न और मिस हैसार्ड का निधन 1912 ई. में ही हो गया। अस्पताल का भवन 1913 ई० में पूरा हुआ जिसका उदघाटन शनिवार 6 दिसम्बर, 1913 ई. को बिहार एवं उड़ीसा के उपराज्यपाल सर चार्ल्स बेली द्वारा किया गया। इस अस्पताल में 40 बेड एवं 01 प्राइवेट वार्ड (निजी वार्ड) उपलब्ध था। निजी वार्ड अमीर भारतीय रोगियों के लिए बनाया गया था। सन् 1913 ई. में पुरूष चिकित्सकों की कमी के कारण पुरुष अस्पताल को बंद कर दिया गया। संत कोलंबा जेनान अस्पताल में पहली बार तीन भारतीय नर्सों मोक्ता, जयकुमारी एवं तवीता की नियुक्ति की गई थी।

नवनिर्मित महिला अस्पताल बहुत लोकप्रिय हो गया। सरकार द्वारा 4000/—रु. प्रतिवर्ष अनुदान दिया जाने लगा। सन् 1916 ई. में मिशन अस्पतालों एवं औषधालयों में 925 अंतः रोगियों एवं 25,695 बाह्य रोगियों का ईलाज किया गया। सन् 1919 ई. में छोटा नागपुर के कमिश्नर ने संत कोलबिया जेनाना अस्पताल में एक नये बाह्य रोगियों के लिए औषधालयों के निर्माण हेतु 7000/—रू. का अनुदान दिया। सन् 1920 ई. में एक महिला चिकित्सा मिस माबेल ग्राह्म आईं। सन् 1923 ई. में मिस माबेल ग्राह्म ने नर्सों के लिए प्रशिक्षण का कार्य शुरू किया। 1923 ई. में रामगढ़ के राजा द्वारा संत कोलबा अस्पताल के नर्सों का घर बनाने के लिए 40,000/— रूपये दान दिये। हजारीबाग जिला बोर्ड द्वारा अस्पतालों में अनुदान के लिए 1000 रू./प्रतिवर्ष की मंजूरी दी। सन् 1926 ई. में पदमा की रानी द्वारा संत कोलबा जेनाना अस्पताल और नर्सों के घर के लिए 1500 रू. का अनुदान दिया गया। सन् 1929 ई. में मिशन के हजारीबाग, पीटरवार, रामगढ़ और ईचाक के अस्पतालों और औषधालयों में 765 अन्तःरोगियों एवं 23,379 बाह्य रोगियों का ईलाज किया गया। नए टीवी वार्ड का निर्माण किया गया और इसके प्रभारी डॉ. (मिस) सी.स्लेटर बनाई गई। 1935 ई० तक हजारीबाग महिला अस्पताल के 1272 अन्तः रोगियों, 2396 बाह्य रोगियों एवं 467 ऑपरेशन रोगियों का ईलाज किया गया। सन् 1937 ई. में रामगढ़ के राजा ने बहुमत प्राप्त किया तथा कोर्ट ऑफ वार्ड समाप्त हो गया। रामगढ़ के राजा से मिलने वाली अनुदान में कटौती कर दी गई जिसके कारण ईचाक और रामगढ़ में औषधालय बंद कर दिया गया। सन् 1938 ई. में रामगढ़ के राजा द्वारा चिकित्सा कार्य से संबंधित अनुदान पर रोक लगा दिया। सन् 1939 ई. में डॉ. (मिस) बिनोदिनी पोरह एक आदिवासी ईसाई महिला संत कोलबा जेनान अस्पताल की सेवा के लिए शामिल हो गई। सन् 1941 ई. में मिस माबेल ग्राह्म को चिकित्सा क्षेत्र (नर्सिंग पेशे) में अमूल्य सेवा के लिए भारत सरकार ने 'कैसर—ए—हिन्द' से सम्मानित किया गया। भारत के स्वतंत्रता के समय सन् 1947 ई. में संत कोलबा महिला अस्पताल में 96 बेड थे और नर्सों को प्रशिक्षण करने की सुविधाएँ उपलब्ध थी।

मानवीय एवं औद्योगिक सेवा

डबलिन मिशान का मुख्य उद्देश्य मानव सेवा करना था। मिशन के माध्यम से एक अनाथालय, एक लेस स्कूल, एक औद्योगिक स्कूल, एक बढ़ईगिरी स्कूल एवं प्रिटिंग प्रेस की स्थापना की गई थी। सन् 1897 ई. में बंगाल क्षेत्र में भयानक अकाल की त्रासदी की घटना घटी। इस दौरान सरकार ने कुछ अनाथ बच्चों को मिशन को सौंप दिया। इसी समय 1897 ई. में मिशन द्वारा अनाथ बच्चों के लिए एक स्कूल की स्थापना की गई। मिस हैसार्ड ने उन्हें संभाला। 1898 ई. में 33 बालकों एवं 14 बालिकाओं के साथ मिलकर इस अनाथालय की नींव रखी गई।

इस मिशन में कई अन्य मिशनरी के सदस्य मिलकर अनाथ बालकों की देखभाल करते थे। इस मिशन में शनैः शनैः अनाथ बच्चों की संख्या में वृद्धि होने लगी। प्रथम विश्वयुद्ध के समयांतराल में अनाथालय को सिंघानी क्षेत्र में स्थांतरित कर दिया गया। सन् 1924 ई. में हंटरगंज में इस अनाथालय को और भी विस्तृत बनाया गया। सन् 1899 ई. में मिशन द्वारा हजारीबाग में एक बढ़ईगिरी का स्कूल की शुरूआत की गई जिसके प्रभारी रेव. एफ. एफ. व्हाइट नियुक्त हुए। इस विद्यालय से कई नवयुवकों ने बढ़ईगिरी का प्रशिक्षण प्राप्त किया एवं रोजगार के लिए सहायक रहा। 1909 ई० में चितरपुर में एक औद्योगिक विद्यालय की नींव रखी गई जिसमे बुनाई का प्रशिक्षण दिया जाता था, परंतु इस विद्यालय को 1915 ई. में बंद कर दिया गया। जुलाई 1915 ई. में रेव. जे. सी. फोरेस्टर द्वारा एक प्रिटिंग प्रेस की स्थापना की गई थी, परंतु इसे जुलाई 1923 ई. में बंद कर दिया गया था।

निष्कर्ष

आयरलैंड से छोटा नागपुर के लिए डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन 8 मार्च 1892 ई० को सोसायटी फॉर द प्रोपगेशन ऑफ द गोस्पेल के सहयोग से हजारीबाग में शुरू हुआ। छोटा नागपुर के तत्कालीन विशप जे०सी० व्हिटली ने मिशन कार्य में सहयोग किया। डबलिन मिशन के सभी सदस्य स्नातक थे। उन्होंने हजारीबाग शहर के शिक्षित सज्जनों की सार्वजनिक व्याख्यान दिये। डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन चिकित्सा एवं शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय रूप से सफल रहा। मिशन के पास शुरू से ही एक मजबूत चिकित्सा कर्मचारी था। हजारीबाग एवं अन्य मिशन केन्द्रों पर औषधालय और अस्पताल का निर्माण सेंट कोलंबा जनाना मिशन अस्पताल ने अपने दक्षता के लिए महान नाम हासिल किया। इसने एक नर्सिंग स्कूल चलाया। मिशनरी के सभी सदस्य शिक्षित होने के कारण हजारीबाग में शिक्षा प्राप्त करने पर बहुत ध्यान दिया। कई प्राथमिक, मध्य एवं उच्च विद्यालय की स्थापना की गई। मिशन ने शिक्षा का प्रचार हजारीबाग, सितागढ़, डूमर, गिरिडीह, कोडरमा, बगोदर, मांडु, रामगढ़, गोला, चतरा और इचाक क्षेत्रों में किया। मिशन ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में 1899 ई. में अविभाजित बिहार में पहला ईसाई कॉलेज संत कोलंबा कॉलेज हजारीबाग में शुरू किया गया। संत कोलंबा कॉलेज में उत्तर–बिहार, बंगाल और उड़ीसा के छात्र पढ़ने आते थे। इस प्रकार डबलिन यूनिवर्सिटी मिशन ने उच्च शिक्षा के में काफी योगदान दिया। इस महाविद्यालय की अध्यापन व्यवस्था बहुत प्रशंसनीय है, जहाँ प्रतिभा सम्पन्न विद्यार्थी कला, विज्ञान एवं वाणिज्य की परीक्षा उत्तीर्ण कर उच्च शिक्षा प्राप्त कर देश की सेवा करते हैं।

संदर्भ सूची

1. चैटरटन अय्यर, (1901), *द स्टोरी ऑफ फिफ्टी ईयर्स मिशन वर्क इन छोटा नागपुर,* सोसायटी फॉर प्रोमोटिंग क्रिश्चियन नॉलेज, लंदान, पृ. 158।
2. खलखो आभा, (2015), *ब्रिटिशकालीन झारखण्ड के कुछ ऐतिहासिक अध्याय,* जेवियर पब्लिकेशन्स, राँची, पृ. 59।
3. वीरोत्तम वी., (2017), *झारखण्ड : इतिहास एवं संस्कृति,* बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, पृ. 561।
4. बास्के बी. वी., (2015), *चर्च ऑफ नॉर्थ इंडिया, डायोसिस ऑफ छोटा नागपुर (1890–2015),* जुबली एसेसीरिज कमिटि, राँची, पृ. 38।
5. राय कामना, (2016), *छोटा नागपुर की जनजातीय संस्कृति व समाज,* इंस्टीच्यूट फॉर रिसर्च डेवलपमेंट, राँची, पृ. 238–239।

6. कालापुरा जोसे, (2014), *क्रिश्चियन मिशन इन बिहार एण्ड झारखण्ड टिल–1947,* क्रिश्चियन वर्ल्ड इंप्रिंट, दिल्ली, पृ. 186, 190, 191–193।
7. खलखो आभा, (2010), *हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन झारखण्ड (1845–1947),* एस० के० पब्लिशिंग हाउस, राँची, पृ. 78।
8. महतो सरयु, (1971), *हण्डरेड इयर्स ऑफ क्रिश्चियन मिशन्स ऑफ छोटा नागपुर सिन्स–1845 छोटा नागपुर,* क्रिश्चियन पब्लिशिंग हाउस, राँची, पृ. 177–178।
9. संत कोलम्बा कॉलेज डायमंड जुबली सोविनयर मैग्जीन (1899–1959), 1959, पृ. 38।
10. एनुअल रिपोर्ट ऑफ डबलिन युनिवर्सिटी मिशन्स, 1926, पृ. 33।
11. www.christianmissionindia.org/index.Php
12. www.christinanity-in-Bihar.html

––==00==––